श्री तुलसीदासजी की रामचरितमानस से सामाजिक उत्क्रांति

निकुंजकुमार धीरजलाल वाघेला

पी .एच.डी. शोध छात्र ,सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी ,राजकोट,गुजरात,इन्डिया

प्रस्ताविक

तुलसीदासजी ने अपने काल में हो रहे समाज से जुड़े कई परिस्थिति को भालीभाती जानकर समाज मे हो रहे बदलाव एवं व्यभिचार के प्रति एक नया वैचारिक युद्ध के साथ रामचरितमानस में अपने सामाजिक उत्क्रांति का भाव व्यक्त किया है | सामान्यतः हमें ज्ञात है के तुलसीदास जी ने रामचरितमानस, श्री वाल्मीकिजी के द्वारा लिखे गए रामायण का ही रूप है परन्तु रामचरित मानस में वर्त्तमान सामाजिक बदलाव एवं परिस्थिति के अनुरूप उसमे बदलाव किया है | जीससे समाजमे धार्मिकता की साथ समाज में सुव्यवस्था प्रस्थापित किया जा सके |

जाती व्यवस्था-

पूर्वकालिक युग की तुलना मे तुलसी का युग सामाजिक क्रान्ति का युग था । भारतीय एवं विदेशी संस्कृति के संघर्ष के परिणामस्वरूप उनमे पारस्परिक आदान-प्रदान होने लगे थे । वर्ण व्यवस्था का रूप शिथिल हो गया था समन्वयवादी तुलसी ने वर्ण-व्यवस्था उन्मूलन के दुष्परिणामों को भली-भाँति समझा और मानव मात्र के लिए रामराज्य रूपी समाज का आदर्श प्रस्तुत किया । वही मणिस्तम्भ युगो से भारतीय संस्कृति एवं समाज को आदीप्त कर रहा है और भविष्य मे भी करता रहेगा । इस प्रकार वर्ण-व्यवस्था के पुनरुजीवक आदर्श के प्रतिष्ठापक तुलसी ने अपने मानस मे जाति-व्यवस्था की चित्रण किया है । रामायण एवं रामचरितमानस की भाव व्यंजना मे अंन्तर है अंतः अन्यजातियो के पूनस्थापन मे भी अन्तर है परंन्तु उनका मूल रूप वही है जो आदिकाल से चला आ रहा है । यहा भी देव,वानर एवं राक्षस जातियो का चित्रण किया गया है । वानर एवं राक्षस जातियो के व्यक्ति भी आर्य एवं मानव जाति से किसी भी प्रकार बल,बुद्धि,विधा,कला,कौशल ने कम न थे । उन्हे मानव से इतरकोटि का नहीं कहा जा सकता । मानस के हनुमान, सुग्रीव, मेघनाथ, विभीषण आदि मानव वर्ग के व्यक्तियों की समता मे किसी भी प्रकार न्यून नहीं कहे जा सकते है । इसके अतिरिक्त दो प्रसंगो मे इन जातियो के मानव सद्रश रूप का भी चित्रण मानस मे किया गया है । सर्वप्रथम असुरो का रूप अवलोकनीय है –

रहे असुर छल छोनिप वेषा |

समस्त वानरो का भी बाह्य रूप तथैव लक्षित होता है –

लंकापति कपीरा फल नीला, **जामवन्त अंगद शुभ सिला** |

हनुमदादि सब वानर वीरा, **घरे मनोहर मनुज सरीरा** ||

इन प्रमुख जातियो के अतिरिक्त रामचरितमानस मे भी किरातादि जंगली जातियो का भी चित्रण किया गया है परन्तु अन्तर मात्र तुलसी की भक्ति भावना का है | गोस्वामी जी ने इन जातियो का उल्लेख भी भक्ति भावना से अनुप्रमाणित होकर ही किया है |

इस प्रकार से श्री तुलसीदासजीने जाती व्यवस्था में भिन्नता भले ही मगर मिल जुलकर रहेने का उपदेश दिया है |

विवाह व्यवस्था

रामायण की अपेक्षा मानसकाल की वैवाहिक स्थिति मे पर्याप्त परिवर्तन आ गया था | विक्षृखलता से क्षुब्ध समाज मे स्थायित्व की स्थापना के अतिरिक्त सामाजिक उत्थान का अन्य कोई विकल्प अवशिष्ट न था | " भए वर्णसंकर कलि " का भीषण द्रश्य रह-रहकर गोस्वामी जी की भयाक्रान्त द्रष्टि हो वेध रहा था अंतः गोस्वामी जी ने विवाह का उच्चादर्श ही सम्मुख रखा | अनुलोम एवं विलोम विवाह का आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत करना भ्रमोत्पादक था क्योकि राजवर्ग विदेशी था | वह स्वयं विजातियों मे वैवाहिक सबन्ध स्थापित कर रहा था, अतएव विवाह की एक पद्धति ही समाज का आदर्श बन सकती थी | एक ही वर्ण मे विभिन्न गोत्रों के विवाह की प्रथा थी | सामाजिक संगठनो मे विवाह के उदेश्य इसी विधि द्वारा अविरल रूप से संम्पादित किए जा सकते थे | विवाह सम्बन्धी सम्पन्न्ताओ,मर्यादाओ का भी आपने सम्यक विवरण दिया है परन्तु इसने "दहज" का रूप ले लिया है | इसी से सीता – राम विवाह मे इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है |

इतना ही नहीं उसका अटूट सम्बन्ध भी स्थापित किया गया है |

"**प्रीति पुरातन लखै न कोई**" |

मानस मे गोसाई जी ने एक परिवर्तन और किया | उन्होने "बहु विवाह" का रूप भी सयमित ही रखा | आर्य जाति मे राजा दशरथ का बहु विवाह तो प्रस्तुत करना ही था क्योकि वह तो कथावस्तु का

ही एक अंग था परन्तु बहु पत्नीत्व के दुष्परिणामों का अन्य आयाम न दिखा कर "गई गिरा मति थोरि" कहकर भवितव्यता पर आश्रित कर दिया है.

तुलसीदास जी ने अपने "सामाजिक आदर्श" मे बहु पत्नीत्व प्रथा के दुर्गुणों की और नहीं वरन उनके प्रति सुधारवादी द्रष्टिकोण को ही अपनाना उचित समझा क्योकि दुर्गुण का उनके समाज मे प्रचलित था ही। उन्ही को दुहराने से "सुरसरि सम सब कर हित होई" अंतः एव उन्होने कैकयी का यही आदर्श दिखाया –

" **कबहुँ न किएहु सवतियारेसू**"।

तुलसी ने वानर जाति मे बहुपत्नीत्व प्रथा का रामायण की भाँति उल्लेख नहीं किया है। उन्होने केवल तारा को ही बालि की पत्नी निर्दिष्ट किया है. अन्य पत्निया का कोई उल्लेख नहीं है। अनुज बधू को तो कन्या सम आदर्शरुप मे देखा है तथा उसके हठात वरण करने का दण्ड भी निर्धारित किया है। राक्षस जाति के महाराजाधीराज रावण के बहुपत्नीत्व का उल्लेख अवश्य है परन्तु उसमे भी तुलसीदास जी ने रामायण का अपेक्षा अपनी मर्यादा का बन्धन अनार्य जाति के प्रतीक पर लगाकर प्रस्तुत किया है ।इसी प्रकार से विवाह व्यवस्था में भी दहेज़ प्रतिबन्ध एवं नारी सन्मान का भी अभिमोदन किया है |

नारी विषयक अवधारणा

रामचरितमानस में नारी को समग्र रूप से अंकित किया गया है | इसमे कन्या, मार्या, माता आदि समग्र रूपों का दिग्दर्शन हुआ है | अबला शब्द का मर्यादा चिन्तन ही संकेतित है

"का न करै अबला प्रबल" पुरुष ने अपने पौरुष एवं गौरव के समक्ष नारी को नगण्य मानकर उसे "सहज जड़ अज्ञ " ही माना | सामाजिक विकास के साथ - साथ पुरुष के कर्तव्यो एवं उतरदायित्वों का क्षेत्र विकसित होने लगा | इस प्रकार परिवार में पुरुष शासक और नारी एवं अन्य पारिवारिक सदस्य शासित हुए | पुरुष के एकाधिकार ने नारी को वेदपाठ, श्रवण, स्मरण आदि से वंचित किया | अपरिमित ज्ञान के अभाव के कारण वह गूढ रहस्यो का ज्ञान प्राप्त करने की अनाधिकारिणी रहकर परतंत्र ही रही | इस तथ्य का अनुमोदन मानस में मैना-पार्वती प्रसंग में किया गया है | नारी प्रत्येक परिस्थिति में पुरुष के पूर्ण आधीन थी अन्यथा वह उच्छूखल हो जाती | पुरुष मुखापेक्षी नारी, गृहिणी एवं दासी मात्र ही बन सकी | इस शास्त्रीय एवं लिकिक रूपरेखा का प्रतिबिम्ब शास्त्रानुमोदक तुलसी के मानस पर पड़ना स्वाभाविक था | उनमे साहस, अनृत, चपलता,माया

,भय,अविवेक, अशौच एवं अदाया नामक आठ अवगुण देखे गये | मानसिक प्रशिक्षण के अभाव में उसमे चपलता आई | अपनी उपरोक्त संकीर्ण परिस्थिति के कारण उसके अन्दर भय एवं अविवेक का उत्पन्न होना स्वाभाविक था | इस अविवेक का सदुपयोग उसे पतिव्रता रूप देकर किया गया तथा इससे सामाजिक संघर्ष की शान्ति हुई |

अन्ततः नारी हदय के माधुर्य की सृष्टि की पूर्णता, परिपक्वता, अद्रितियता की द्रष्टि से मानस समस्त आधिभौतिक, एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य के भी सार का सार प्रतीत होता है जो समग्ररूप से नारी की समस्त भावनाओ को अपने अन्दर समाहित किए है |

शिक्षा व्यवस्था -

गोस्वामी तुलसीदास जी के युग में सामाजिक व्यवस्था का रूप विदेशियों के आगमन एवं सांस्कृतिक वर्णसंकरता के कारण अत्यन्त परिवर्तित हो गया था। स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी ने शिक्षा के प्रमुख तत्वों की यथार्थ स्थिति की और द्रष्टिपात करके अपनी ग्लानिमय भावना व्यक्त की है –

गुरु सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनई एक नहीं देखा॥

हरइ सिष्य घन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महँ परई॥

..... का उल्लेख कर "जाई न वरनि अनीति अपारा" की ओर भी संकेत किया है |

अतएव तत्कालीन शिक्षा का वह कौन सा आदर्श प्रस्तुत करते ? फिर भी यथार्थ के अतिरिक्त तुलसी की आदर्शद्रशिनी द्रष्टि ने रामचरितमानस मे मिश्रित शिक्षा के आदर्श की ओर इंगित किया है |

गुरु विश्वामित्र के साहचर्य मे रहकर विधाध्ययन करना उनके चरणों की सेवा करना पूजार्थ पुष्पो का चयनादि करना, शिष्य के विनीत एव सेवापरायण रूप का आदर्श प्रस्तुत करता है |

मानस मे शिक्षाशास्त्र के विभिन्न तत्वो की ओर स्पष्ट संकेत तो नहीं हे परन्तु समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, गणित, ज्योतिष, वन्स्पतिशास्त्र आदि के प्रसंग पर्याप्त मात्रा मे मिलते है | तुलसीदास जी आर्यकालीन शिक्षा व्यवस्था के परिपोषक थे जिसका प्रभाव याज्ञव्लक्य भारद्राज संवाद मे परिलक्षित होता है |

शिक्षा के सम्बन्ध मे इतिहास वेता एव शिक्षा शास्त्री डॉ राधा कुमुद मुखर्जी भी कहते है की आश्रम के जीवन का, जीवन की अन्य अवस्थाओ से वेसा ही सम्बन्ध है जेसा की कली का पुष्प से |

रामचरितमानस मे नारी शिक्षा की प्रामाणिकता नहीं प्राप्त होती है मात्र अनसुया जी द्वारा दिये गये उपदेश ही पर्याप्त है -

"**कह रिषि बधू सरस मृदु बानी | नारिधर्म कछु व्याज बखानी** ||"

इस प्रकार सम्पूर्ण रामचरितमानस की शिक्षा प्रेरक ही रही है |

धार्मिक व्यवस्था-

तुलसी के समय मी तत्कालीन धार्मिक स्थिति का रूप पूर्वकालीन स्थिति से निनान्त भिन्न था | विविध विचार पद्धतियों के कारण शक्ति एक से अनेक हो चली थी | शैव वेष्णोव मे पर्याप्त भेद था | इन दो सम्प्रदायो मे विविध शाखा प्रशाखाए बनती गयी जिसका परिणाम धार्मिक शक्ति का हास था | धर्म के उन्नायक तुलसी ने धर्म के क्षेत्र मे अप्रतिम योगदान दिया जिसका भूल कारण उनकी समन्वयतमिकता प्रतिभा थी जिससे धर्म का देश का कल्याण हुआ | इसकी प्रशंसा भारतीय ही नहीं अपीतू विदेशी तत्वान्वेषको ने भी करते हुए कहा हे की- "भारतवर्षीय धर्मोन्नति के इतिहास मे जा आसन तुलसी को दिया जाता उससे कही उच्चतर आसन के यह अधिकारी है | क्योकि हम किसी भी धर्म प्रचारक महात्मा की श्रेष्ठता का आकलन उसके परिणाम से लगाते है | यह कहने मे की नौ करोड मनुष्य महात्मा तुलसी की रचनाओ पर ही अपने धर्म तथा सदाचार के तत्वो की स्थापना किए हुए है | हम सामान्य गणना से बहुत कम आकते है | वर्तमान कल मे इनकी रचनाओ ने लोगो पर जो प्रभाव डाल रखा है | यदि हम इसी को मापदंड मान कर परीक्षण करे तो एशिया के तीन या चार महान लेखको मे गोस्वामी जी एक ठहरते है |

वैदिक देवो की भी मानस मे मान्यता है | इन देवो ने राम के कार्य क्षेत्र मे प्रोत्शाहनकर्ता क कार्य किया है | इतना ही नहीं उनकी स्वार्थप्रियता की कटु आलोचना भी की गयी है |

तत्कालीन प्रचलित शैव एवम वेष्णोव सम्प्रदायो समन्वयवाद स्थापित कर राम को शिवभक्त ओर शिव को रामभक्त दर्शाकर तुलसी ने तत्कालीन धार्मिक स्थिति की विषमता शान्त कर आदर्श पथ निर्मित किया |

इस प्रकार रामचरितमानस मे धार्मिक प्रतिस्थापना क स्वरूप जितना विशाल है | उतना अन्यत्र नहीं मिलता |

संदर्भ सूचि ग्रंथ

- **रामचरितमानस - १-३२५-३२६**
- **रामचरितमानस-४-१-१०१-५**
- **रामचरितमानस-६-१५-३**
- **रामचरितमानस-३-४-५**
- Ancient India Education Page no- 326
- **रामचरितमानस-२-११-५-६**

सहायक ग्रंथ

- **वाल्मीकि रामायण**
- **आध्यात्म रामायण**